

TDC II - 24th March 2020
technical class - same practice.

संनिकर्ष विचार

संयोग। →

संयुक्त समवाय \rightarrow वार एवं रंग। — रंगमैत्रेय + समवाय.

संयुक्त समवेत संभवार्थ → दूर + नील → नीलत्वं → अंगयोग + संभवार्थ + संभवार्थ

समवाय → आकाश गद्द

समवेत समवाय \rightarrow आदर्श

विशेष विग्रेह्य भाग \rightarrow द्रव्य भाग

विशेष विगोच्य भाव → द्वाय भाव एक ही चिन्ता, दो द्वय के वास्तवी
अन्तरिक, कारण-कारि की कथा प्रत्यक्ष (प्राचीन नैयायिक) , निव्य
समवाय → अयुतसिद्ध सत्य अनुमान ज्ञान प्रत्यक्ष (प्राचीन नैयायिक) , निव्य
अनुमान ज्ञान निगम-विज्ञान , सामान्य-विशेष, विशेष-निव्य

5 नोट \rightarrow अवयव - सहाय्यी, गुण - प्रुणी, श्रिया - क्रियावान, सामान्य - विशेष, विचार -

अनुनिशीलन सक्रिय ज्ञान का विषय अभिप्राय शांति गुणराहित, संयोग नियमों के
विपर्यय अर्थव्यवस्था, अविनाशिता, सत, निमित्तमय शांति, लक्ष्मी

सोमज्य अनुपस्थिति → सोमज्य विशेष

सामान्य लघु कृत → तादात्म्य संकेत, अस्मृत्य, विश्लेषणरहित, उनके अनंत स्मृत्य

विद्योम \rightarrow स्वतो व्यावृत्त
अप्रत्यय

निष्कृति, स्थाय, असमवायिकरणत्व, कर्मभिन्नत्व, गुणग

गुण नहीं, प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष दोनों सर्वनिष्ठ, ज्ञेय, जागरणी, स्वेच्छाप्रमाणानां

वैशेषिक $\rightarrow 17$ जुग (प्रशस्तपादे $\rightarrow 17+7 \rightarrow$ प्रदार्थवामसग्रह)

गुण समान्य \rightarrow संख्या रूपांतरण, संयोग-वियोग, परत्व, अपरत्व, अमयकत्व, मुरत्व

विशेष → कप, रस, गंध, स्पर्श, स्नेह, बौद्धि, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, धर्म, अधर्म, संस्कार

परमाणु \rightarrow प्रोटॉन + न्यूट्रॉन + इलेक्ट्रॉन, मिश्रक्रीय, जल में, गैर-जल, आदि अणु,

[illegible]

आम्रश → अपरमाण्विक, वि. अं., एक, निर्णय, निरूपण, निष्कर्ष, अनुमति, परामर्श

आत्मार्क ६ जुग → सुख, दुःख इत्यादि - दुःख, प्रयत्न, शन
 ५. उपान उपान, उपान उपान → ४

जीवात्मा → मुख-दुःख, रूढि-दुःख, प्रयत्न, जावनी, धर्म अध्ययन. → ०

भौतिक → पृथ्वी, जल, वायु, आदि।
 रासायनिक → पदार्थ, अणु, अणु, अणु।

मुख्य \rightarrow रंग, रस, गंध, स्पर्श, मीन
परापर \rightarrow दृश्यत्व, पशुत्व, गंध

आकाश, दिक्, काल, मातृम। दिक्-काल / काल-विश्व का आयुष्य, काल का निर्मित

विष्णु → आत्मा, आकाश, नीलकण्ठमणि, दक्ष-काल, कालचक्रवर्ती या अखण्ड/असंख्य कालावधि का रजः प्रवृत्तापी

अभौतिक → स्वयं, सक्रिय, जगहहीन, अभौतिक, शून्य इत्यादि।

द्वि-काल → विभु, सर्वव्यापक, नित्य, अनिन्द्य, अनालोक्य, अनुपम। भाग-2

आत्मो → ज्ञान आकस्मिक गुण, नीति, धर्म

अभियंता (दिक कल) अंता गिणिए आसिष्ट हेतु

सत्यमिचारि ल३

धारण असाधारण अनुपसंख्यी अज्ञानसिद्ध स्वतन्त्राशीद्ध
(अज्ञानसिद्ध)

मक (हेतु) संकीर्ण (हेतु), संव्याही (पक्ष) का रूप निष्पन्न पक्ष (संत) (हेतु 7 साधन) → उपपन्न (हेतु)

→ स्वामी सायबलया (अश्वमेध) 1-ही समर्प प्रवृत्ति है।

मन → न घटत, न नित्य, स्वातन्त्र्य → संशय

मन उ न ओठ, न नित न शालक → शाल
 शालव (शाल) → शालावाट → मनुष्य के शब्द उत्पत्ति से ही शब्द की

उत्पत्ति होती है, इस स्फोटवाद कहते हैं → न्याय

आत्मशक्तिवाद → मीमांसक का मत है कि प्राकृत में जो शक्ति है, वह नियत है, प्रवहमान है।

एक विज्ञात अर्थ की है।

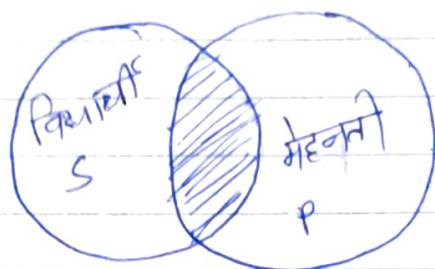
मोमसा शब्द → विद्य, निरवयव संज्ञित, शब्द अन्तिम → मीमांसक

विशेष \rightarrow परमाणु, देश, काल, आत्मा मन शब्द + अर्थ \rightarrow नित्य न मानाये

3. विशेष स्वीकारात्मक तर्कवाक्य (I)
(Particular Affirmative Proposition)

03

Ex - free S, P & I
free financial market



उद्देश्य
विधेय

⇒ तर्कशास्त्र का उद्देश्य

⇒ तर्कशास्त्र नियामक आदर्शमूलक विज्ञान है।

=) निजनात्मक तर्कशास्त्र युक्ति के आकार की वैधता-अवैधता, निश्चित करता है।

✓) तर्कवाक्य सत्य या असत्य होते हैं, परंतु तर्कवाक्य के आधार न सत्य हैं न असत्य।

04 Sunday

✓ विधायक विज्ञान \rightarrow वस्तुगत सत्यता, वस्तु है, होना चाहिए नहीं।

निर्धारक विज्ञान \rightarrow होना चाहिए, अनुमान किस प्रकार होना चाहिए।

⇒ ध्रुवित की वैद्यता उसके आकार पर निर्भर करती है।

→ निगनात्मक युक्ति या शास्त्र आकारिक सत्यता पर निर्भर है।
न कि वस्तुगत (वास्तविक) सत्यता

2) आगमनात्मक युक्ति वस्तुगत सत्यता पर निर्भर है, जबकि आकारिक सत्यता नहीं

⇒ तर्कशास्त्र निधामक विज्ञान, जो तर्कवाक्यों के बीच तात्त्विक सम्बन्धों की जाँच करता है। सत्यता - असत्यता परीक्षण